IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"प्रारंभिक विद्यालयों में सतत गिरता नामांकन स्तरः कारण एवं प्रभावों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

आशा राम

स0अ0रा0पू0मा0 विद्यालय थकुलसारी, बीरोंखाल, पौडी गढ़वाल,(उत्तराखंड) भारत।

सारांश :–

यह सर्वविदित है कि प्राचीन काल से ही शिक्षा मानव के सतत विकास एवं कल्याण का आधार रही है। विभिन्न कालचक्रों में शिक्षा एवं शिक्षण व्यवस्था अनेक स्वरूपों में देखने को मिलती है। प्राचीन गुरुकुल पद्धति हो या वर्तमान कंप्यूटर आधारित शिक्षण संस्थाएं, अनेकों प्रकार से शिक्षा का माध्यम रही है। शिक्षा से ही मनुष्य की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ है। आज उत्तराखंड राज्य के आंकड़े बताते हैं कि राज्य के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में छात्रों का नामांकन स्तर सतत घटता जा रहा है। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही प्रसिद्ध संस्था प्रथम की वार्षिक शिक्षा रिपोर्ट 2014 के अनुसार 96.7% बच्चें विद्यालय में नामांकित होते हैं किंतु 71% बच्चे ही स्कूल पहुंचते हैं। यू–डायस प्लस के अनुसार–सतत घटती छात्र संख्या के कारण उत्तराखंड राज्य में वर्ष 2012–13 से 2019–20 तक 846 विद्यालय बंद कर दिए गए हैं। वर्तमान में 3000 विद्यालय ऐसे है जो 10 या 10 से कम छात्र संख्या वाले हैं, जो बंद होने की स्थिति में आ गए हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से विकास क्षेत्र– बीरोंखाल, जनपद–पौड़ी गढ़वाल के सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सतत घटती छात्र संख्या के कारणों को समझने एवं उनके निराकरण का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द :–

मानव शिक्षा, सतत विकास, मूल्यांकन, गुरुकुल प्रणाली, कंप्यूटर आधारित, शिक्षण संस्थाएं घटती छात्र संख्या, प्रारंभिक विधियां, सार्वभौमिक आदि।

प्रस्तावना :–

यह सार्वभौमिक सत्य है कि शिक्षा मानव विकास की रीढ है। प्राचीन काल से ही शिक्षा समाज और राष्ट्र की उन्नति के आकलन का आधार रही है। अर्थात बेहतर शिक्षा से ही उन्नत जीवन संभव है। भारत की 70% जनसंख्या आज भी गांव में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्राथमिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र सरकारी विद्यालय हैं। यह विद्यालय भविष्य हेतु एक समृद्ध समाज व राष्ट्र निर्माण में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं मानव हेतु शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि – ''शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है।'' इस संबंध में **डॉक्टर बी.आर. अंबेडकर** ने कहा था कि – ''शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो जितना पियेगा उतना ही दहाड़ेगा।''

नेल्सन मंडेला के अनुसार – ''शिक्षा मनुष्य का शक्तिशाली हथियार होता है, जिससे सारी दुनिया को बदल जा सकता है।''

अतः किसी देश की भावी पीढ़ि के भविष्य निर्माण का संपूर्ण दायित्व वहां के शिक्षक, समाज और राजनीति पर निर्भर करता है। प्रारंभिक शिक्षा ही किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निर्माण की रीढ़ होती है। यूनेस्को की ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2021 के अनुसार भारत के करीब 5 करोड़ बच्चे उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा भी पूर्ण नहीं कर पाते हैं। कक्षा 6 से 8 तक के बच्चे बीच में ही किसी न किसी कारणवश स्कूल छोड़ देते हैं। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इनफॉर्मेशन सिस्टम ऑफ एजुकेशन प्लस के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2020–21 में देश में कुल 15.09 लाख स्कूल थे। 2021–22 मे यह संख्या 14.89 लाख रह गए। शिक्षको की संख्या 96.96 लाख थी जो घटकर 95.07 लाख रह गई। छात्र संख्या 12.20 लाख थी जो घटकर 12.18 लाख रह गई है। शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन एवं सर्वेक्षण करने वाली प्रसिद्ध संस्था प्रथम की वर्ष 2021 की ताजा रिपोर्ट बताती है कि देश में 97.5 प्रतिशत बच्चे विद्यालयों में नामांकित होते हैं लेकिन मात्र 94.75% बच्चे ही अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर पाते हैं, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। उत्तराखंड में वर्ष 2012–13 तक कुल 12499 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय थे, जिनमें से वर्ष 2019–20 तक 846 विद्यालय बंद हो चुके हैं आज मात्र 11653 विद्यालय शेष बचे हैं। इनमें से भी 3000 विद्यालय ऐसे हैं जिनकी छात्र संख्या 10 या 10 से कम है और बंद होने की कगार पर आ गए हैं। अकेले गढ़वाल मण्डल में ऐसे विद्यालयों की संख्या 719 है, इनमें 645 प्राथमिक और 74 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। उत्तराखंड राज्य के गठन से लेकर आज तक सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की छात्र संख्या में अत्यधिक कमी आई है। जिससे शिक्षा विभाग और शिक्षकों का चिंतित होना स्वाभाविक है।

शोध उद्देश्यः–

1. अभिभावकों द्वारा छात्रों का नामांकन सरकारी प्रारंभिक विद्यालयों में न कराने के कारणों को ज्ञात करना।
2. प्राथमिक विद्यालय में भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता से अवगत होना।
3. प्रारंभिक विद्यालयों के शैक्षिक स्थिति को जानना ।
4. प्रारंभिक विद्यालयों/शिक्षा के संदर्भ में राज्य एवं केंद्र सरकारों की नीतियों की जानकारी प्राप्त करना।

शोध समस्या कथनः–

प्रारंभिक विद्यालय में सतत गिरता नामांकन स्तरः कारण एवं प्रभावों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शोध साहित्य की समीक्षा :–

[1]**डॉ पूनम भूषण एवं डॉ आबिद** के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अपने बच्चों को अभिभावक इसलिए दाखिला दिलाना नहीं चाहते क्योंकि अधिकतर अभिभावक सरकारी विद्यालयों के शिक्षण कार्य से संतुष्ट नहीं है। विद्यालयों में शिक्षकों की कमी नहीं है। विद्यालय में सभी मूलभूत सुविधाएं लगभग सही स्थिति में उपलब्ध नहीं है। सरकारी विद्यालयों के शिक्षक नियमित उपस्थिति भी रहते हैं , शैक्षिक स्तर भी अच्छा है, किंतु सरकारी शिक्षकों पर अन्य विभागीय कार्यों का बोझ सर्वाधिक रहता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जाति भेद – भाव की समस्या है। अनेकों विद्यालयों में आज भी पेयजल, शौचालय, खेल का मैदान, लाइब्रेरी कक्ष, स्पोर्ट्स संसाधन, विषय अध्यापकों आदि की कमी है ।

[2]**सत्यम कुमार** के अनुसार सरकारी विद्यालयों में घटती छात्र संख्या के लिए एकमात्र कारण पलायन को ही जिम्मेदार नहीं मानते हैं, बल्कि इसके लिए वे सरकारी विद्यालयों में मूलभूत शैक्षिक संसाधनों की अपर्याप्ता को जिम्मेदार मानते हैं। इसी कारण अभिभावकों का आकर्षण निजी विद्यालयों की ओर बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि सरकारी विद्यालय दिन प्रतिदिन छात्र शून्य होते जा रहे हैं और निजी विद्यालयों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है।

[3]**सुशील कुमार शर्मा** के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षा के लिए मूलभूत सुविधाओं की स्थिति अत्यंत खेद जनक है। यहां पर कक्षा कक्ष, प्रयोगशालाएं, शौचालय, फर्नीचर ब्लैक बोर्ड, खेल के मैदान, पेयजल की सुविधा नहीं है और अगर है भी तो बहुत खराब स्थिति में है। लड़कियां सरकारी स्कूलों में सुरक्षित नहीं है। उनके लिए शौचालय की व्यवस्था या तो विद्यालय में नहीं है या बहुत खराब

स्थिति में है। राजनीतिक एवं नौकरशाहों का नजरिया भी ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के प्रति निराशा जनक है।

अध्ययन का क्षेत्रः– विकास खण्ड–बीरोंखाल, पौढ़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) तक अध्ययन क्षेत्र सीमांकित किया गया है।

शोधकर्ता का अध्ययन क्षेत्र बीरोंखाल, (पौड़ी गढ़वाल) समुन्द्र तल से 1650 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय की प्राकृतिक सुरमयी वादियों में स्थित है। यहां वर्ष 2013–14 तक कुल 157 विद्यालय थे, जिनमें 134 प्राथमिक विद्यालय और 23 उच्च प्राथमिक विद्यालय थे। इनमें कुल 2803 छात्र–छात्राएं अध्यनरत थे। यह आंकड़ा वर्ष 2022–23 तक आते–आते कुल 122 प्राथमिक और 17 उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा कुल 1702 छात्र–छात्राओं में सिमट कर रह गया। आज यह राज्य सरकार एवं शिक्षको के लिए एक गंभीर समस्या बन गई है।

इस प्रकार उत्तराखंड राज्य, जनपद एवं क्षेत्र में नियमित घटती छात्र संख्या ने शोधकर्ता को इस विषय पर शोध करने और उनके कारण एवं समाधान खोजने हेतु अभिप्रेरित किया।

शोध प्रविधि एवं उपकरण :–

इस शोध–पत्र में प्रस्तुत जनपद पौड़ी गढ़वाल के अंतर्गत विकास क्षेत्र–बीरोंखाल के 10 संकुलों से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय वाले सेवित क्षेत्र से 5–5 पुरुष और महिलाओं का चयन सुविधा अनुसार निदर्शन पद्धति से किया गया है। इस प्रकार कुल 100 उत्तरदाताओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

- **प्राथमिक सामग्रीः–**डाटा संकलन हेतु सर्वेक्षण प्रश्नावली/साक्षात्कार अनुसूची तथा व्यक्तिगत साक्षात्कार करके तथ्यों को संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त अवलोकन विधि एवं अनौपचारिक वार्तालाप का भी सहयोग लिया गया है।
- **द्वितीयक सामग्रीः–** शोध–पत्र को तैयार करने में डाटा संकलन हेतु आवश्यक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों, सरकारी एवं गैर सरकारी स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों, जनसंपर्क कार्यालय, इंटरनेट आदि से प्राप्त सूचनाओं का अध्ययन कर आवश्यक सामग्री का संकलन किया गया है। डाटा संकलन में इंटरनेट की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- **तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण एवं सारणीयन :–**इस शोध के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि जनपद पौड़ी गढ़वाल में कितने प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं, कितने बंद हो गए हैं और कितने विद्यालय बंद होने की कगार पर हैं। जिससे यह स्पष्ट ज्ञात हो सके कि बच्चों की शिक्षा और शिक्षण कार्य कितना

प्रभावित हो रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में अभिभावक और सरकार बच्चों के भविष्य को लेकर कितने सजग है? शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को लेकर कितने समर्पित हैं कि नहीं? विद्यालयों का वातावरण कैसा है? विद्यालय में किन–किन संसाधनों की कमी है? आखिर क्यों लोग अपने बच्चों को निजी विद्यालय में पढ़ाना चाहते हैं? साथ ही उन कारणों को ढूंढने का भी प्रयास किया गया है कि–सरकार के द्वारा अनेकों प्रयास और जनजागरूकता अभियानों के पश्चात भी सरकारी विद्यालयों में छात्रों की संख्या सतत क्यों घट रही है? यही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है। विकास क्षेत्र बीरोंखाल, जनपद पौड़ी गढ़वाल के सरकारी विद्यालयों की समस्याओं को जानने के प्रयास किए गए हैं:–

तालिका क्रमांक–1

पलायन से विद्यालयों में नामांकन प्रभावित होता है:–

क्र0सं0	क्या क्षेत्र में लोगों के पलायन से नामांकन घट रहा है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	96	96%
2.	नहीं	4	4%
3.	योग	100	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 96% उत्तरदाताओं के अनुसार सरकारी विद्यालयों में छात्रों के नामांकन में कमी का प्रमुख कारण पलायन को मानते हैं।

तालिका क्रमांक –2

विद्यालयों के शैक्षिक स्तर के संबंध में ।

क्र0सं0	क्या सरकारी विद्यालयों का शैक्षिक स्तर निम्न कोटि का है?	संख्या	प्रतिशत
1.	अच्छा	85	85%
2.	खराब	15	15%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 85% उत्तरदाताओं ने माना है कि सरकारी विद्यालयों का शैक्षिक स्तर अच्छा है, वही 14% के अनुसार शैक्षिक स्तर अच्छा नहीं है।

तालिका क्रमांक– 3

शिक्षकों की अपर्याप्ता के संदर्भ में।

क्र0सं0	क्या सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्ता है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	73	73%
2.	नहीं	27	27%
	योग	100	100%

उक्त तालिका के अनुसार 73% उत्तरदाता विद्यालयों में विषय अध्यापकों की संख्या में कमी से सहमत है, वहीं 27% इससे असहमत है।

तालिका क्रमांक – 4

संसाधनों की कमी के संदर्भ में ।

क्र0सं0	क्या सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	50	50%
2.	नहीं	50	50%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका के अनुसार 50% उत्तरदाताओं का मानना है कि सरकारी विद्यालयों में मूलभूत शैक्षिक संसाधनों की कमी है, जबकि 50% उत्तरदाता इससे सहमत नहीं है।

तालिका क्रमांक– 5

सामाजिक/जातिय भेद भाव के संदर्भ में ।

क्र0सं0	क्या सामाजिक/जातिय भेद–भाव होता है ?	संख्या	प्रतिशत
1.	नहीं	80	80%
2.	हां	20	20%
	योग	100	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार 80% उत्तरदाताओं का मानना है कि सरकारी विद्यालयों में सामाजिक/जातिय भेद भाव नहीं होता है जबकि 20% के अनुसार भेद भाव होता है।

तालिका क्रमांक–6

लोगों का अंग्रेजी मीडियम स्कूलों के प्रति आकर्षण के संदर्भ में।

क्र0सं0	क्या अंग्रेजी मीडियम स्कूलों के प्रति आकर्षण बढ़ा है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	85	85%
2.	नहीं	15	15%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 85% उत्तरदाता अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम स्कूलों में पढ़ना चाहते हैं जबकि 15% उत्तरदाता इसके पक्ष में नहीं है ।

तालिका क्रमांक –7

लोगों की कृषि एवं कुटीर उद्योगों के प्रति उदासीनता के संदर्भ में।

क्र0सं0	क्या लोगों में कृषि एवं कुटीर उद्योग प्रति उदासीनता बढी है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	76	76%
2.	नहीं	24	24%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका के अनुसार 76% उत्तरदाताओं ने लोगों में कृषि एवं कुटीर उद्योग के प्रति उदासीनता को स्वीकार किया है, जबकि 24% उत्तरदाता इससे सहमत नहीं है।

तालिका क्रमांक–8

मध्यान भोजन योजना से शैक्षिक गुणवत्ता के संदर्भ में।

क्र0सं0	क्या एम.डी.एम से शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित होती है?	संख्या	प्रतिशत
1.	नहीं	60	60%
2.	हां	40	40%
	योग	100	100%

अतः कि उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 60% उत्तरदाताओ ने विद्यालयों में एमडीएम योजना के संचालन से शैक्षिक गुणवत्ता की प्रभावकारिता से इनकार किया है, जबकि 40% उत्तरदाताओं ने इसे स्वीकार किया है।

तालिका क्रमांक – 9

लोगों में बढ़ती शहरीकरण की महत्वाकांक्षा के संदर्भ में ।

क्र0सं0	क्या लोगों में शहरीकरण की महत्वाकांक्षा बड़ी है?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	98	98%
2.	नहीं	2	2%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका के अनुसार 98% उत्तरदाताओं का मानना हैं कि लोगों में शहरीकरण की महत्वाकांक्षा बड़ी है। क्योंकि नई पीढ़ी गांव में रहना नहीं चाहती है। वही 2% लोगों ने इस से इनकार किया है।

तालिका क्रमांक –10

सरकारी शिक्षकों का अन्य विभागीय कार्यों में व्यस्तता के संदर्भ में ।

क्र0सं0	क्या शिक्षक अन्य विभाग के कार्यों में व्यस्त रहते हैं?	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	89	89%
2.	नहीं	11	11%
	योग	100	100%

अतः उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 89% उत्तरदाताओं के अनुसार सरकारी विद्यालयों के शिक्षक अन्य विभागीय कार्यों में अधिक व्यस्त रहते हैं, जिससे शिक्षण कार्य एवं शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। जबकि 11% उत्तरदाता इस कथन से सहमत नहीं है।

A-विकास खंड बीरोंखाल, पौड़ी गढ़वाल का सकल छात्र–छात्रा नामांकन ग्राफ चार्ट

(वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

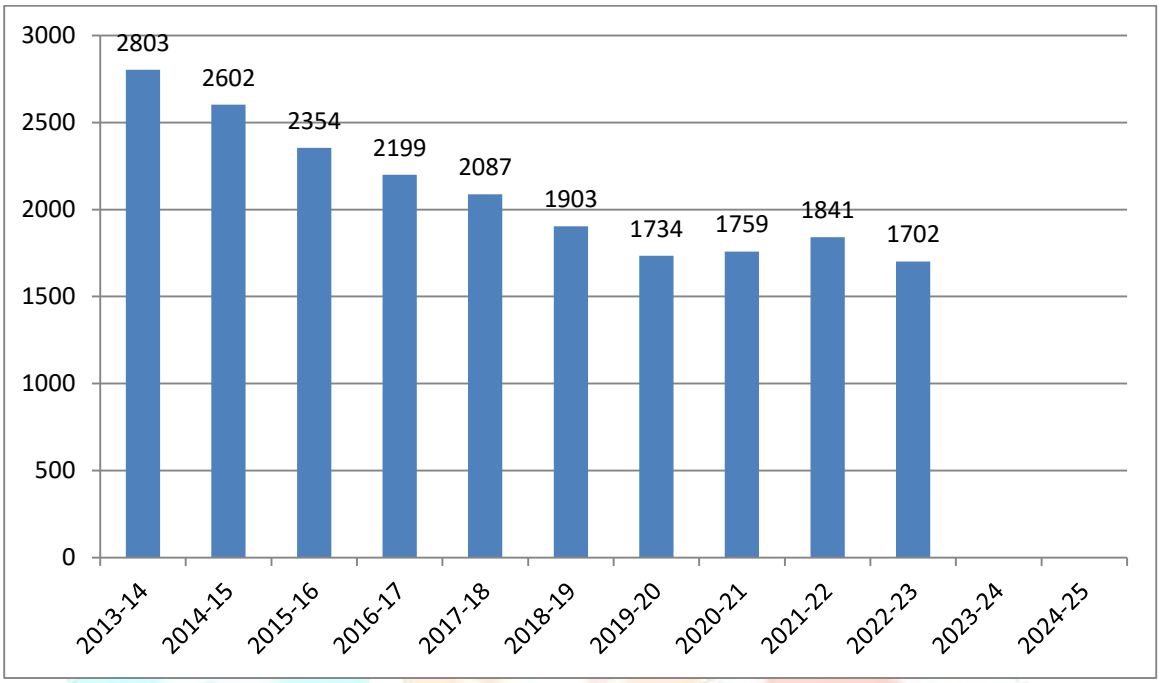

2803 – 1702 = 1101 छात्रों की कमी आई

1101X100/2803 = 39.28% की कुल गिरावट आई।

पाई चार्ट

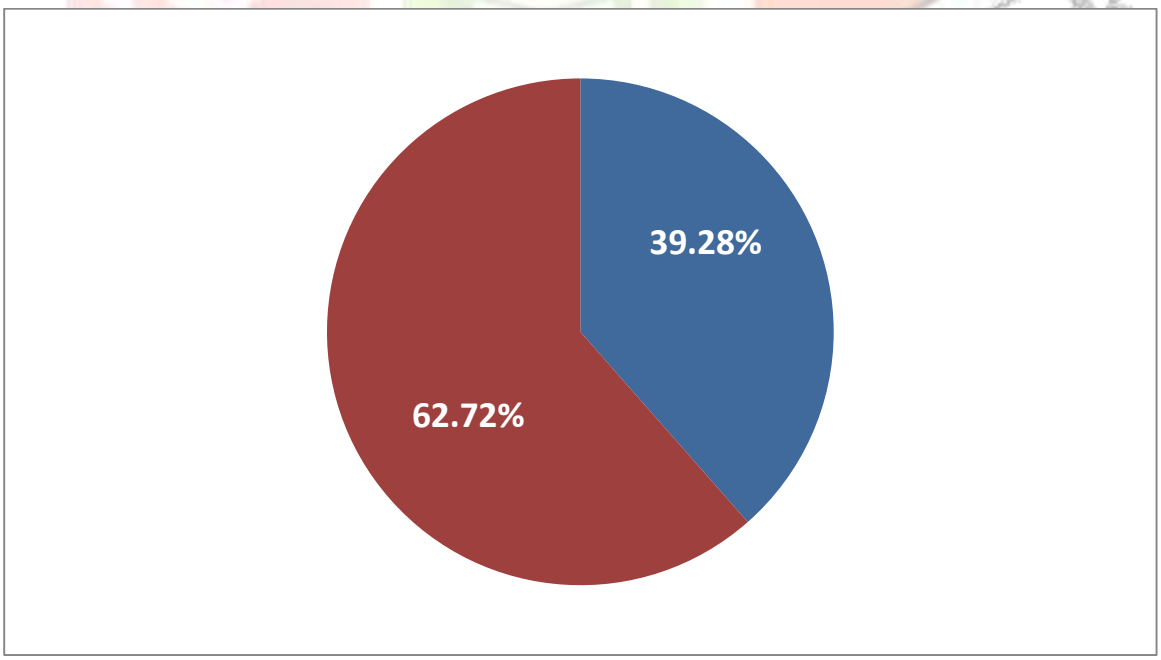

B-विकास खंड बीरोंखाल, सकल एस0सी0एस0टी0 छात्र–छात्रा नामांकन ग्राफ चार्ट

(वर्ष 2013–14 से 2022–23 तक)

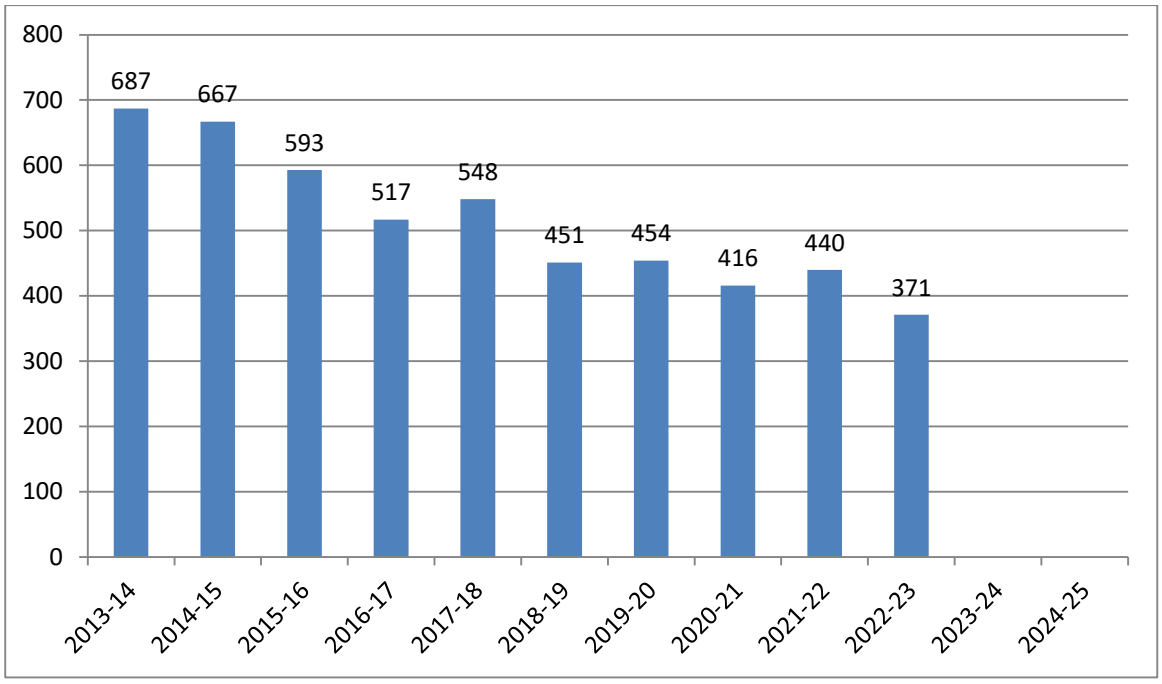

687–371= 316 की कमी आई

213 X 100 / 687= 45.99% की कुल गिरावट हुई ।

पाई चार्ट

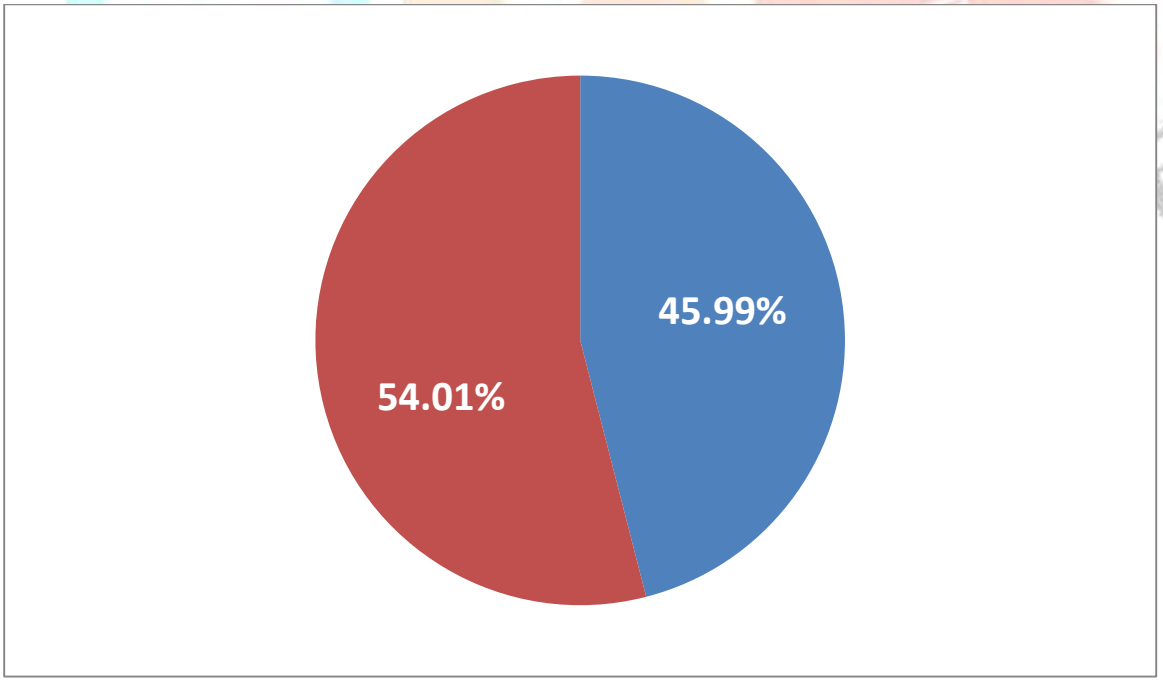

पाई चार्ट

C- विकास खण्ड बिरोखाल में बन्द हुऐ विद्यालय (गत 10 वर्षों में)

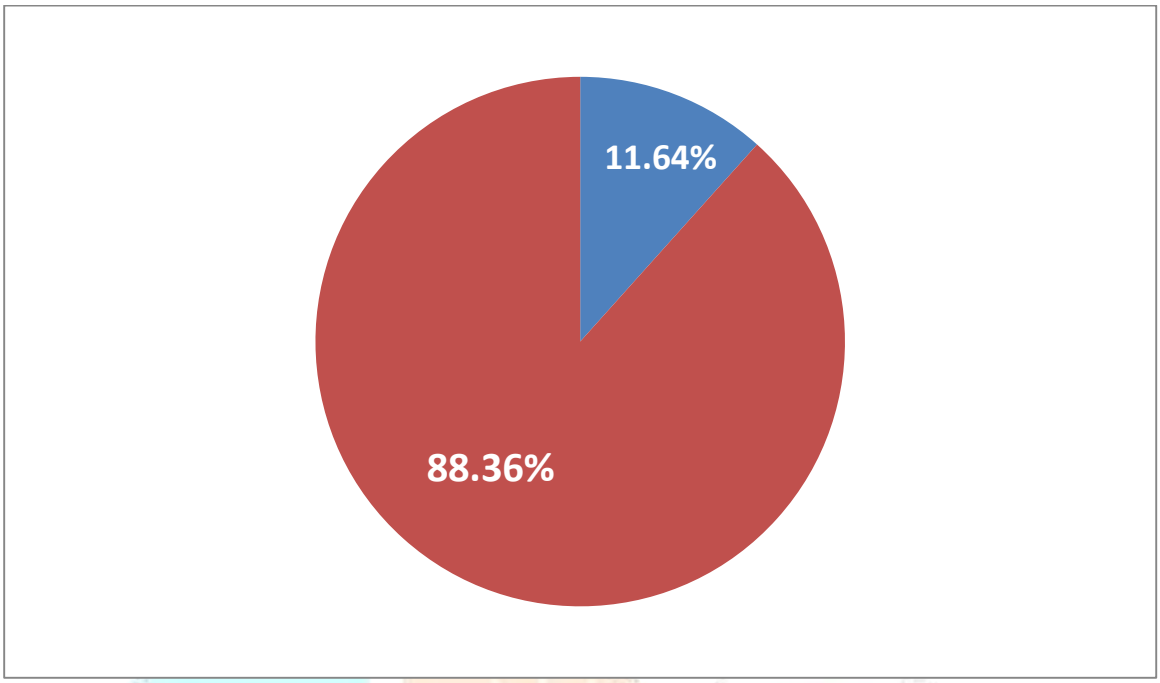

(157–139 =18)

निष्कर्ष एवं सुझावः– विद्यालय में सतत छात्र–छात्रा नामांकन मे गिरावट आ रही है।

2. सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या में कमी है।
3. अभी भी 40% विद्यालय ऐसे हैं जिनमें मूलभूत शैक्षिक संसाधनों का अभाव है।
4. अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ना चाहते हैं।
5. अधिकतर लोग गांव में रह कर कृषि कार्य या कोई कुटीर उद्योग नहीं करना चाहते। बल्कि शहरों में नौकरी करना अधिक पसंद करते हैं।
6. नई पीढ़ी शहरी चकाचौंध, सुख सुविधाओं, ग्लैमर आदि के पीछे दौड़ रही है। जिससे लोग शहरो की ओर पलायन कर रहे है और विद्यालयों की छात्र संख्या घट रही हैं।
7. शिक्षक विद्यालयों में उपस्थित रहते हैं। सरकारी विद्यालयों का शैक्षिक स्तर भी अच्छा है, लेकिन शिक्षकों का शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अन्य सरकारी कार्यों में अधिक व्यस्थ रहना भी घटती छात्र संख्या का एक प्रभावी कारक है।
8. पहाड़ों में जन्म दर भी निरंतर घट रही है। जिस परिवार में कभी 2 या 4 बच्चे होते थे, आज वह परिवार मात्र 1 या 2 बच्चों तक ही सिमट कर रह गया हैं।

9. आरटीई के अंतर्गत उत्तराखंड/भारत सरकार द्वारा 25% छात्राओं को प्राइवेट स्कूलों में प्रवेश दिलाना भी एक महत्वपूर्ण कारक है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि अनेक सरकारी विद्यालयों में आज भी मूलभूत संसाधनों का अभाव है। जैसे विद्यालयों में पीने का पानी, विद्यालय भवनों में की दयनीय स्थिति, फर्नीचर की अपर्याप्तता, शौचालय, खेल के मैदान, इंटरनेट , स्मार्ट क्लास, लैब, स्पोर्ट टीचर, पुस्तकालय, स्टाफ रूम आदि की कमी है। उत्तराखंड में आज युवा पीढ़ी शादी विवाह भी इसी शर्त पर कर रहे हैं कि लड़का शहर में रहता है अथवा नहीं। लड़के वालों का अपना घर शहर में है अथवा नहीं। अब विचारणीय प्रश्न है कि जब युवा पीढ़ी पहाड़ में निवास नहीं करेंगी, तब यहां जनसंख्या अथवा छात्र संख्या में वृद्धि होना असंभव प्रतीत होता है।

सुझावः– अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छात्र नामांकन मे अभिवृद्धि हेतु कुछ सुझाव दिए गए हैं जो निम्नलिखित हैः–

1. हालांकि केंद्र और राज्य सरकार द्वारा पलायन रोकथाम हेतु अनेक महत्वपूर्ण स्वरोगार योजनाएं लागू की गई है जैसे हैं मनरेगा–2005, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना–2015, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वयरोजगार योजना–1.6.2022 जीविका अवसर प्रोत्साहन योजना–2022, युगपतीकरण योजना–2022 आदि योजनाएं। इन योजनाओं के अतिरिक्त राज्य अथवा केंद्र सरकारों द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक से अधिक स्वयं रोजगार जैसे कुटीर उद्योग, बागवानी, उन्नत कृषि, पशुपालन एवं डेयरी उद्योग, फूलों की खेती, परंपरागत कार्य (बांस की टोकरी) आदि योजनाओं में इच्छुक बेरोजगारों को प्रशिक्षित कर अधिक से अधिक आर्थिक सहायता एवं उनके उत्पादों की बिक्री हेतु सरकारी खरीद केंद्र बनाए जाने चाहिए। इससे लोगों का पलायन रुकेगा और छात्र संख्या में सकारात्मक अभिवृद्धि होगी।
2. अध्यापकों से शिक्षण के अतिरिक्त कार्य, जैसे बी0एल0ओ0, निर्माण कार्य आदि से मुक्त रखा जाना चाहिए।
3. प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम 3 और उच्च प्राथमिक में 4 अध्यापक अवश्य नियुक्त होने चाहिए।
4. शिक्षकों को दिया जाने वाला सभी प्रकार का प्रशिक्षण ऑनलाइन मोड में दिया जाना चाहिए।
5. विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएं एवं शिक्षक पर्याप्त मात्रा में होने चाहिए।
6. राज्य सरकार ने वर्ष 2011–12 से 2022–23 तक आर0टी0ई0 के अंतर्गत आने वाले 25% ई0डबल्यू0एस0 छात्रों पर कुल रु 126 करोड़ की धनराशि (निजी विद्यालयों की फीस आदि पर)

व्यय की है। इससे भी सरकारी विद्यालयों की छात्र संख्या प्रभावित हो रही है। अतः इसे बन्द किया जाना चाहिए।

8. सरकारी विद्यालयों के प्रति समाज, अभिभावकों की नकारात्मक सोच को बदलने में सरकार सकारात्मक प्रयास करे।

शोध का महत्त्वः–

इस शोध पत्र के माध्यम से सरकारी विद्यालयों में सतत गिरते नामांकन स्तर के कारणों को ज्ञात किया जायेगा। तत्पश्चात विद्यालयों में छात्र नामांकन वृद्धि कैसे की जाए? इस पर गहनता से चिंतन मनन किया जा सकेगा। इसके लिए विद्यालय स्तर से ही सकारात्मक प्रयास किए जा सकते है। विद्यालय प्रबंधन समितियों और क्षेत्रीय जन–प्रतिनिधियों का अमूल्य अपेक्षित सहयोग एवम मार्गदर्शन लिया जा सकता है। इससे जहां विद्यालयों के छात्र नामांकन मे वृद्धि होगी, वहीं विद्यालयों की शैक्षिक स्थिति में भी अपेक्षित सुधार होगा। इस शोध–पत्र के निष्कर्षों से राज्य सरकार को भविष्य शिक्षा नीति बनाने में सहायता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. इंटरनेट
2. School.org.ASER report 2021–22.
3. ETV Bharat 23 February-2022
4. Sharma Sunil Kumar report - Hindi Webdunia.com
5. https://www.Census2011.co.in
6. Hindi news 18 (25 March 2015)
7. UDISE +
8. Bhushan Dr. Poonam, Dr. Abida Research Paper International Journal of Humilities and Social Science Research, volume 5, Issue 2, Page no- 142& 144, March, 2019
9. नेगी सुनील रिपोर्ट– दैनिक जागरण समाचार पत्र, 21 जून, 2022 देहरादून संस्करण इंडिया स्पेंड,

11– कुमार सत्यम रिपोर्ट– फरवरी 2022, देहरादून

12– सोशल डेवलपमेंट फॉर कम्युनिटी एस.डी.सी. रिपोर्ट –2012 –22, अमर उजाला समाचार–पत्र, 29 जनवरी– 2023, देहरादून संस्करण।